स्वातन्त्र्य कवि अर लोकगीतकार: जनकवि शंकरदान सामौर

लेखा चौधरी (शोधार्थी),
राजस्थानी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

सारांश - राजस्थानी संस्कृति रा वाहक अर आधुनिक साहित्यिक परम्परा रा हरावळ कवि शंकरदान सामौर परम्परागत काव्य री लीक छोड़ नै चेतना जगावण वाळा जनकवि री भूमिका बेखूबी सूं निभायी। इण काल में देस माथै अंग्रेजी हकुमत, उणरां अत्याचारां अर, अन्यावां सूं मानखौ दुखी हौ। अबै राजावां नै विरुदावण री दरकार कोनी ही। क्यूंकै केई राजावां तो अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया बणग्या हा अर कई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रौ सौदौ कर बैठा हा। कवि गौरी सरकार रै काळै मन नैं वै चोखी तरियां जाणता हा। ''फूट घालौ अर राज करौ'' वाळी दोगली अर खोटी नीतियां, कानूनां आगे तळ-तळीजतै मानखे नै न्याव दिरावण वास्तै कवि शंकरदान सामोर री कलम चाली।[1] आप सबद भेरी रै माध्यम सूं मायड़ भोम रा सपूतां मांय वीरता रा भाव जगाया अर सूतोड़ा जूझारां ने देसहित सारू जागण रौ अमर संदेसो दियौ। आन बान अर सान लारे प्राण होम करणियां वीरां नै आप घणां बिड़दाया अर आपरी रचनावां वीरत्व रै भावां रौ सांगोपांग चित्रण अर सांची ओळखाण करावै। इणी'ज भात लोकगीतां रै मार्फत समाज नै सांस्कृतिक अर सामाजिक उत्थान सारू चेतायौ। आपरा रच्यौड़ा लोकगीत वीरत्व अर भक्ति रै भावां सूं ओत-प्रोत हा, जिणां मांय अंगरेजां रै खिलाफ माथौ ऊँचै कर खड़यौ होवणियो हर मिनख आपरै लोकगीतां रौ असळी नायक है, अै लोकगीत सुतन्तरता रा मूल्यां, सांची मर्यादा, अर परम्परा रौ सबळ निरूपण करै।

मुख्य संकेताक्षर - अंग्रेजी हकुमत, सुतन्तरता, सपूत, मायड़ भोम, लोकगीत, वीरता, देशभगती, परम्परा, जनसाधारण, महान कवि, जननायक, अंजसजोग, संदेस, कानून अर कलम आद।

सोध-आलेख -

शंकरदान सामौर सन् 1857 रै सुतंत्रता संग्राम रा सैनानी कवि हा। आपरै-जुग रा लोगां नै आजादी खातर त्यार कर्या अर देश भगती की भावना रो तेज प्रगटायो। शंकरदान सामौर जैड़ा महापुरस दुनियां मांय बीरला ही होवै। वे आपरै करम सूं, साधना सूं, इता महान हुय ज्यावे के जन-जन रै कंठा बस ज्यावै अर गीतां में गाईजै। वाकैई शंकरदान सामौर वीरां रै मन में भावै जीसा अर गीता में गाई'जै जीसा हा। राजस्थान मांय अेक लोकोक्ति है कै मानखौ दोय चीजां सूं अमर रैवै ''कै तो गीतड़ा, कै भींतड़ा।'' सो शंकरदान सामौर जैड़ा महाकवि रा गीत आज चारूं दिस चव कूंटा गाईज रैया है तो समझौ के वांरा गीत तो अमर हुआ ही पण वां खुद नै भी अमर करग्या। आज शंकरदान सामौर रा लिखियौड़ा गीतां री वजह सूं ही कवि बाबत् लिखयौ जावै कै -

''संकरियै सामौर रा, गोळी जेहड़ा गीत।
मिंतज सांचा मुलक रा, रिपुवां उलटी रीत।''[2]

महाकवि शंकरदान सामौर नै 1857 री क्रांति रा आगीवांण अर आंदोलनकारी केवां तो कोई अजोगती बात कोनी। क्यूं कै आप खुद आजादी रै आंदोलन रा भागीदार बणयां अर आजादी रै इण यज्ञ री अग्नि नै आपरी कवितावां अर लोकगीतां रूपी समीधा सूं चेतन राखी। आप अेड़ा गीतां री रचना करी जका गीत जनमानस रै हियै छायगा अर दुस्मणां सारू गोळी रौ काम करियौं आपरै इण सिरजण सूं जकी चेतना अर क्रांति आई, जको विगसाव हुयो वो उण जुग में ही नीं वर्तमान जुग मांय जकी चेतना पैदा करै वा घणी अद्भूत है, आ ही वजह है कै आज शंकरदान सामौर रौ नाम आंखै राजस्थान मांय घणै अंजस अर हरख सागै लियौ जावै अर राजस्थानी साहित्य रा सिरमौड़ कहिजै।

शंकरदान सामोर असल मांय सौ टका जनता रा कवि अर जननायक हा। अेड़ा महान सिरजक रो साहित वांकेइ अंजसजोग तो है ही पण ओ आवण वाळी पीढ़ियां नै भी प्रेरणा देवतौ रैवैलौ अर चेतना रा सुर जगावतो रैवैलो। इण महान कवि री देस री आजादी सारू अै ओळियां जन-साधारण मांय नूवौ जोस अर उछाह भरण रो काम करे -

"मरस्यां तो मोटै मतै, सो जग के सी सपूत।
जीस्यां तो देस्यां जरू, जुलम्यां रे सिर जूत।"[3]

आपरै गीतां मांय यूं तौ आजादी रै आंदोलन रा बौत सा गीत मिलै अर वे अगूंता चावा भी हुया पण शंकरदान सामौर रौ आन्दोलनकारी अर लूंठै रचनाकार रै सागै-सागै अेक और रूप हो अर वो हो आम आदमी रौ, अेक राजस्थान रै वासी रौ, उणारै साहित मांय दियाळी री रोसनी चमचमाती निंगै आवे तो होळी री धमाल आद री धारमिक मानतावां रौ दरसाव हुवें इण वरणाव सूं पतौ लगै राजस्थान री सांस्कृतिक विरासत किती लूंठी ही। बहल ठाकुर कानसिंह सलेदीसिंघोत गोरां रौ डटनै मुकाबलौ कर्यौ। आप उणांरी तारीफ मांय अेक धमाळ लिखी जकी उण इलाका में आज ई घणै चाव सूं गाईजै।

"हद करग्यौ कान सलेदी को, हद करग्यौ।
अेक तो कान बिरज को वासी,
द्वजौ कान सलेदी को, हद करग्यौ।
बृज को कान तो काळ करूं को,
ओ तो काळ फिरंगी को
हद करग्यो कान सलेदी को, हद करग्यो।"[4]

इण धमाळ सूं लखावै के कवि रै हिवड़ा मांय तीज तैंवारा रै प्रति भी लूंठौ लगाव रैयौ है, इणसूं लखावै के उणांरो मन राजस्थानी संस्कृति मांय रेम्यौड़ौ हौ।

इतौ ही नीं, बहल माथै अंगरेज अर बीकानेर राज री फौज हमलो कर दियौ, पण बहल रा शेखावता सूं भिडंत होवतां ई बीकानेरी फौज गोड़ा टेक दिया। कवि इण प्रसंग ने लैय नै अेक 'फाग' लिख्यौ। औ 'फाग' अजै तांई उण इलाका मांय होळी रै बगत घणौ चाव सूं गायौ जावै -

कुण रोकै रै शेखावत थांरी फौजां नै
कुण रोकै रै।
गोरा तो नांख टोपला भाजै, भाजै राव बीकाणा को
कुण रोके रै।
के तो रूकावै थांरा भाई भतीजा
कै रूकावै बेटा बामण का
कुण रोकै रै।
मनवारां रूकावै थांरा भाई नै भतीजा
आसीसां रूकावै बेटा बामण का
कुण रोकै रै।
के तो रूकावै थांरा सगां रै गिनायत
के रूकावै बेटा बांण्या का
कुण रोकै रै।[5]

इण गीत में आई मान-सम्मान री बात, मान-मनवार री बात, आसीस देवण री बात, अै सगळी री सगळी बातां शंकरदान सामौर रै जुग रा सांस्कृतिक परिवेस नै चैड़ै करै।

शंकरदान सामौर राजस्थानी साहित नै नुवो जुग बोध दियौ। परम्परागत तौर सूं चाली आंवती सहित, समाज री मानतावां री जड़ता नै तोड़ी। सांस्कृतिक मानतावां नै नुई दिसा दीन्हीं। रजपूती अर वीरता री परिभाषा नै जात रै घैरै सूं काढर राष्ट्र री धारणा, स्वाभिमान, मानवता अर अधिकारां री लड़ाई सूं जोड़ी -

"देख मरै हित देस रै पेख सचो रजपूत
सिरदारा तोनै सदा, कहसी जगत कपूत।"[6]

किणी अेक सींव या अेक गेरां सूं राष्ट्रीयता री भावना नै काढ'र देस अर देसहित सागै जोड़ना अर राजावां, सामंता नै मूंडा-मूंड कपूत कैय देवणौ कोई छोटी बात नीं है। इण दीठ सूं देखां तो शंकरदान सामौर राजस्थानी ही नीं बल्कि भारतीय संस्कृति नै आपरै विचारां सूं, कवितावां सूं, बातां सूं, व्यवहार सूं, अर लोकगीतां सूं समाज में थापित करण रौ लूंठौ काम करियौ। जकौ पीढ़ियां ताई अमर रैवैला।

आं तमाम दाखळां रै पछै सार रूप मांय ओ ही कैयौ जाय सकै के शंकरदान सामौर 1857 री क्रांति रा आगीवांण, अर भारतीय संस्कृति रा अग्रदूत कवि हा जका आपरी कवितावां सूं, आपरी बीरता सूं, आपरी देसभगती सूं, लोगां नें चैताया अर अंग्रेजी सता सूं मुगती रौ मारग दिखायौ। आजादी अर सुतन्तरता रै खातर जका बीज आप 1857 मांय बोया हा, वै हीं 1947 मांय फळीभूत हुया।

- - -

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. साहित्य सुजस (भाग-2) कक्षा-12, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड़, पृ. 197
2. शोध-पत्र - ''जनकवि शंकरदान सामौर'' - डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, हिन्दी विभाग, राजस्थान वि.वि. जयपुर के से.नि. विभागाध्यक्ष।
3. शोध-पत्र - ''राजस्थानी कविता में साम्राज्यवाद विरोधी चेतना के कवि शंकरदान सामौर''- डॉ. मूलचन्द सेठिया, हिन्दी विभाग राजस्थान वि.वि. जयपुर के से.नि. एसोसियेट प्रोफेसर।
4. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियां रौ योगदान- डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, पृ.192
5. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियां रौ योगदान - डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, पृ. 193-194
6. भारतीय साहित्य रा निर्माता शंकरदान सामौर - भंवरसिंह सामौर - पृ. 52